लोदी मकबरा सिकन्दरा (1517–26 ई॰)

यह अनाम मकबरा एक ऊँची चतुरास जगती पर बना है, जिसके कोनों पर छत्रियाँ थीं जैसे 'सासाराम' में 'शेरशाह के मकबरे' (ल॰ 1545 ई॰) में बनी हैं। मुख्य मकबरा मूलत: चतुरास्र है किन्तु इसके कोनों को काट दिया गया है, जिससे यह अष्ट्रास सा लगता है। यह बगदादी–मुसम्मन (अठपहलू–चतुरास्र) तल–योजना है जिसको मुग़लों ने (1560–1658 के मध्य) बहुत प्रयोग किया। मकबरे के अन्दर एक केन्द्रीय अष्ट्रास हॉल, कोनों पर चार अष्ट्रास्र कक्ष और पार्श्वों में लम्बाकार मेहराबदार दालान हैं, जो सभी परस्पर अलिन्दों द्वारा सम्बद्ध हैं। यहाँ शायद मुगलों की विशिष्ट **नवग्रह तल–योजना** का आरंभ हुआ। प्रत्येक मुखार पर तीन–तीन चौड़े, पठान श्रेणी के मेहराब हैं। एक छज्जा इनकी रक्षा करता था। उसके तोड़े बच गये हैं। इसके ऊपर एक चौड़ा विशाल गुम्बद था जो अब नष्ट हो गया है। दो कब्र पाषाण छत में अभी भी गड़े हुए हैं, स्पष्ट ही वे पति–पत्नी के हैं। इनकी प्रतिकृति कब्रें मुख्य हॉल में भी थीं, मूल कब्रें नीचे तहखाने में थीं। पूर्ण संरचना अनगढ़ पत्थरों और ईंटों की चुनाई की है और पत्थर का काम कम से कम है, इसके ऊपर मोटा प्लास्टर किया गया था। चित्रकारी के कुछ चिन्ह बच गये हैं। जो शाहज़ादा या सामन्त अपनी पत्नी सहित यहाँ दफ़न है उसकी पहचान के लिए कोई ऐतिहासिक लेख नहीं है, यद्यपि शैली के अनुसार यह मकबरा इब्राहीम लोदी के काल (1517–26 ई॰) का हो सकता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इसका जीर्णोद्धार किया है और यह उसके संरक्षण में है।

●